AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

रामचरित मानस और तुलसीदास का स्त्री–चिंतन

ORIGINAL ARTICLE

Authors
सुमित तिवारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
डॉ. शिप्रा द्विवेदी
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय
रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

महाकवि महात्मा तुलसीदास का व्यक्तित्व अप्रतिम है। शाश्वत जीवन के अनन्त शान्तिमय पथ की खोज सदा से महात्माओं का कार्य रहा है। मानव–समाज में रावणत्व का अन्त कर रामत्व की प्रतिष्ठा करना उनका मूल लक्ष्य होता है। यह कार्य उपदेशों के द्वारा उतना सरल नहीं होता जितना काव्य के सहारे। काव्य के कलापूर्ण सांचे में ढलकर रूढ़ विचार धारा सतत् भाव–धारा का रूप धारण करती और अपने आकर्षक एवं रमणीय प्रवाह में व्यक्ति को ही नहीं समाज को भी बहा ले जाती तथा उसकी जीवन–धारा में परिवर्तन उपस्थित कर देती है। रेती भावधारा के प्रवर्तक ही युग प्रवर्तक के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं। गोस्वामी जी निश्चय ही ऐसे युग प्रवर्तक संत कवि थे। रामचरितमानत के अवलोकन से उत्पन्न उनकी अन्तःचेतना की अनुभूति ही 'कविता–सरिता के 'जन–जीवन' के क्षेत्र में प्रवाहित हो उठी थी। वह इसलिए कि उसमें मन का मैल धुले तथा मानसिक विकारों के प्रक्षालन से अब तक उनके मलिन आवरण में प्रच्छन्न आत्मा की ज्योति जगामगा उठे, जिससे जीवन की जड़ता दूर होने पर चेतनता का अभ्युदय हो। ऐसे अभ्युदय के पश्चात् ही मलिन संस्कारों से आवृत होने के कारण भलित प्रतीत होने वाला स्त्री का उज्ज्वल रूप भी प्रकट हो सकेगा। 'चरित–सिंधु' राम के अनन्य भक्त गोस्वामी तुलसीदास को गुरु मानने वाला अवश्य ही उनके 'पद–रज–अंजन' की दिव्य दृष्टि उपलब्ध कर सकेगा। उस समय श्रीराम–चरितमानस में अंतर्हित मणि माणिक्य के साथथ केवल स्त्री–रत्न ही नहीं उसका मूल्य प्रक्ट करने का वह 'जतन' भी उसके हाथ लगेगा जिससे मानव यह समझ सके तथा देख सके कि यह स्त्रीरत्न भी उचित मूल्यांकन एवं सदुपयोग किए जाने पर राम–रत्न की प्राप्ति में सहायक हो सकता है।

मुख्य शब्द

स्त्री, तुलसीदास, रामचरितमानस, राम, भक्ति.

प्रस्तावना

विश्वकवि गोस्वामी तुलसीदास का काव्य सार्वभौम है। उन्होंने जो कुछ लिपिबद्ध किया है वह विशेष देश और विशेष काल में होते हुए भी देशकाल की सीमा से मुक्त, मानवमात्र के सर्व कालव्यापी जीवन के लिए है। उसमें मानव–जीवन के उन मूल तत्त्वों एवं सिद्धान्तों का विश्लेषण है जो कभी भी एवं कहीं भी प्रेरणा प्रदान कर परमपद

तक पहुंचा सकते हैं। मानव को एक निर्दिष्ट परमलक्ष्य की ओर उन्मुख करने के लिए उसको भावनाओं, विकारों एवं विचारों को एक निर्दिष्ट ढांचे में ढालना चाहिए इस विचार से तुलसीदास ने मानव मात्र को परमलक्ष्य तक पहुँचाने के लिए श्रुति सम्मत हरि भक्त–पथ को ही सर्वाधिक प्रशस्त सिद्ध किया। कवि एवं मनीषी ही नहीं, लोक द्रष्टा एवं पथ प्रदर्शक तच्चे समाजसेवी के नाते तुलसीदास ने अपने इस लक्ष्य में सर्वाधिक सफलता प्राप्त की है। दीर्घकाल से उनके काव्य की जो प्रतिष्ठा होती रही है और आज भारतीय संस्कृति की प्रतिकूल प्रकृति वाले देशों में भी बढ़ती जा रही है, उससे उनका महत्त्व स्वतः सिद्ध है।

आधुनिक युग में उनका महत्त्व पश्चिमी विज्ञानों ने भी पहुंचाना तथा एच.एच. विल्सन, गार्ताद तालो, एफ.एस. ग्राउस एवं ग्रिर्यसन प्रभृति विद्वानों ने उनका अपनी दृष्टि से मूल्यांकन किया। ऐसे प्रकाण्ड विधान एवं लोकप्रिय महात्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व लिपिबद्ध करने की उनमें विशेष उत्कण्ठा जागृत हुई। हिन्दी के अनेक विद्वानों ने अपने अपने शोथ एवं अनुमान के दल पर यह कार्य आगे बढ़ाया तथा अविरल गति से निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है।

स्त्री का आध्यात्मिक और लौकिक स्वरूप क्या है, उसका मानव के अन्तर एवं बाह्य जगत से क्या सम्बन्ध है तथा पुरुष के जीवन में स्त्री का क्या योग एवं महत्त्व है, इस संबंध में गहराई में प्रवेश कर तुलसीदात्त की विचारधारा पकड़ने एवं परखने की चिन्ता साहित्य के किसी विचारक अथवा तुलसीदास के किसी उपासक को नहीं हुई। किसी भी देश एवं किसी भी काल में किसी भी समाज में मानव के उत्कर्ष एवं अपकर्ष में नारी की महत्ता सर्वमान्य है।

तुलसीदास को युगप्रवर्तक एवं समाज–सुधारक की उपाधि से एक स्वर से विभूषित करते हुए भी किसी विद्वान् का इस दृष्टि से उनका मूल्यांकन का विचार अथवा प्रयास न करना चिन्तनीय है। जिसे हम युगद्रष्टा मानकर दावे के साथ कहें कि मानव जीवन का कोई भी क्षेत्र उनकी तुलसीदास की दृष्टि से अछूता न रहा और उन्होंने सभी प्रकार से समाज एवं लोक के कल्याण का प्रयत्न किया, उनके संबंध में हम यह कभी न विचारें कि मानव जाति और समाज के प्रमुख अंग स्त्री के महत्व का उन्होंने कभी कोई मूल्यांकन किया या नहीं यह उदासीनता या उपेक्षा संप्रति युग में उपयुक्त नहीं ठहरती।

मानव जीवन में स्त्री योग असंदिग्ध रूप से प्रधान है। उसके बिना न सृष्टि संभव है और न उसका संचालन ही। पुरुष को तो उसके बिना लोक–जीवन नितान्त नीरस एवं व्यर्थ ही प्रतीत होता है। स्त्री विश्व की सबसे बड़ी विभूति है, सौन्दर्य का आकार है, शक्ति की केन्द्र है। प्रकृति एवं पुरुष के योग से निर्मित सृष्टि ब्रह्म एवं माया की अभिव्यक्ति है जिसके कण–कण में वे व्याप्त है। जीव का अवतरण इसी के मध्य होता है। जीव, जगत् और ब्रह्म की यह गुत्थी सुलझाना ही दार्शनिकों का कर्तव्य रहा है। इसी के सुलझाने पर ही परम तत्त्व का बोध सम्भव ठहरता है। जो सभी का मूल है तथा जिसे प्राप्त करना मानव–मात्र का परम पुरुषार्थ है। लोक की उपेक्षा कर लोक का कल्याण किस प्रकार संभव है। उसे आँखों से तौलकर उसके दोष किस प्रकार देखे जा सकते हैं कि उनका परिहार हो? उसके कल्याण के उद्देश्य से उसमें प्रवेश कर, उसके गुण–दोष परखकर संग्रह त्याग बुराई से गुणों का ग्रहण एवं दोषों का त्याग करके ही उसे उत्कृष्ट बनाया जा सकता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल और रामकुमार वर्मा जैसे समीक्षकों ने तुलसी को स्त्री प्रशंसक बताया है। आचार्य शुक्लजी का यह मत है किः ''युग व्यापक विराग और तप की भावना के कारण तुलसी ने नारी के उस रूप का

[1]

इसी प्रकार रामकुमार वर्मा कहते हैं– ''तुलसीदास ने नारी जाति के लिए बहुत आदर भाव प्रकट किया है। पार्वती, अनुसूया, कौशल्या, सीता, ग्रामवधू आदि की चरित्र–रेखा पवित्र और धर्मपूर्ण विचारों से निर्मित हुई है।''[2]

दूसरे पक्ष के हिमायती अर्थात् तुलसी को स्त्री निंदक माननेवाले समीक्षकों में मिश्र बंधुओं का नाम सबसे ज्यादा लिया जाता है।

इसी तरह माताप्रसाद गुप्त कहते हैं– ''प्रत्येक युग के कलाकार नारी–चित्रण में प्रायः उदार पाए जाते हैं,

किंतु नारी–चित्रण में तुलसीदास बेहद अनुदार हैं। यद्यपि उनकी इस अनुदारता का कारण अब तक रहस्य के गर्भ में छिपा हुआ है, पर नारी– विषयक उनकी अनुदारता एक ऐसा तथ्य है जिसको अस्वीकृत नहीं किया जा सकता।''[3]

उपर्युक्त दोनों अवधारणाओं के अनेक कारण हैं। वास्तव में तुलसी की स्त्री भावना को परखने के लिए मोटे तौर पर चार शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है।

1. इष्ट से संबंधित स्त्री

तुलसी ने समस्त विश्व को सियाराममय कह–कर विश्व के तमाम संबंधों को राम और सीता के साथ जोड़ने का प्रयास किया है:

''सियाराममय सब जग जानी।
करौं प्रनाम जोरि जुग पानी।।''[4]

इस रूप में वे तमाम स्त्री पात्र जो गोस्वामी तुलसीदास के इष्ट(राम) के साथ जुड़े हैं, उन सभी के प्रति तुलसी का रागात्मक संबंध है। सबसे पहले राम की माता कौशल्या के प्रति तुलसी के मन में सर्वाधिक पूज्यभाव है:

''बंदौ कौसल्या दिसि प्राची।
कीरति जासु सकल जग मांची।''[5]

इसी प्रकार भगवान राम की सहधर्मिणी सीता तुलसी की निगाह में जगत्जननी है:

''सुमिरत राम तजहिं जन तृन सम विषय बिलासु।
रामप्रिया जगजननी सिया कछु न आचरजु तासु।।''[6]

लक्ष्मण–जननी सुमित्रा के लक्ष्मण को विदा देते समय के कथन में तुलसीदास का भक्त हृदय ही प्रकट होता है:

''पुत्रवती जुवती जग सोई।
रघुपति भगतु जासु सुत होई।।''[7]

इस प्रकार कौशल्या, सीता, सुमित्रा आदि स्त्री पात्रों के प्रति तुलसी के मन में अहो–भाव हैं।

सामान्यतः मर्यादापालन एवं पतिव्रत को तुलसीदास सर्वाधिक महत्व देते हैं। मर्यादा का अतिक्रमण उन्हें क्षम्य नहीं है। परंतु इष्ट की भक्ति करने वाली धर्मोपासना के क्षेत्र में अग्रसर होने वाली नारी के प्रति त्याग को भी वे श्लाघ्य मानते हैं। कृष्ण प्रेम में मतवाली गोपियों के परित्याग को कल्याण और सुख का आवाहक बतलाते हैं:

''बलि गुरु तज्यौ कंत ब्रज,
बनितनि भए मुदमंगलकारी।''[8]

भगवद्भक्ति के कारण अपने परमपूज्य पति को कटु वचन कहने वाली स्त्री मंदोदरी उनके दृष्टिकोण के अनुसार प्रशंसनीय है। हरिभक्तिमय स्त्री अथवा नर राम को अत्यंत प्रिय है ,अतः शबरी को भी योगिवृंद–दुर्लभ गति मिलती है। तुलसी रामभक्ति में संलग्न नर अथवा नारी दोनों को ही परम गति के अधिकारी मानते हैं।

2. स्त्री का आदर्श रूप

'रामचरितमानस' में सीता, कौशल्या, पार्वती, सुमित्रा, अनसूया तथा मंदोदरी आदि के चरित्रों में स्त्री का आदर्श–रूप प्रतिफलित देखा जा सकता है। सीता आदर्श पत्नी हैं और साथ ही मर्यादा–शील कुलवधू भी हैं। हृदय पति के साथ वन जाने को उत्सुक है, पर पति यहीं अयोध्या में रुकने का उपदेश देते हैं। पतिव्रता हृदय क्षोभ से व्याकुल हो उठता है, किंतु पारिवारिक जीवन की सात्विक मर्यादा का उल्लंघन न कर, सास के चरण स्पर्श कर, उनके समक्ष पति से भाषण करने की अविनय के लिए क्षमा–प्रार्थना कर लेती है:

''बरबस रोकि बिलोचन बारी।
धरि धीरज उर अवनिकुमारी।
लागि सासु पग कह कर जोरी।
छमबि देवि बड़ि अबिनय मोरी।''[9]

भगवती सीता के चरित्र में तुलसी की उदात्त स्त्री भावना मुखरित हुई है। सीता को लेकर तो गोस्वामी तुलसीदास ने भारतीय स्त्री का आदर्श रूप चित्रित किया है एक प्रतिव्रता स्त्री के तमाम गुण तुलसीदास ने सीता के चरित्र में अंकित किये हैं।

कौशल्या का हृदय मंदाकिनी की वह शीतल धारा है जो पात्र–अपात्र, ऊंच–नीच का विचार किए बिना सबको समभाव से शीतलता और स्निग्धता का पवित्र दान देती है। उनके स्नेहपूर्ण हृदय में पुत्रवधू के प्रति भी अपरिसीम ममता है, जिसे वे जीवनमूल के समान स्नेह–जल से पालती रहती हैं।

''कलप बेलि जिमि बहु बिधि लाली।
सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली।''[10]

अनसूया के मुख से सीताजी को जो उपदेश तुलसी ने दिलाया है, वह वस्तुतः सारी स्त्री जाति के लिए आदेश है:

''एकै धर्म एक व्रत नेमा।
काय बचन मन प्रति पद प्रेमा।।''[11]

सुमित्रा आदर्श माता हैं, जिनके लिए कर्तव्य ही प्रधान है। बड़े भाई तथा प्रभु दोनों रूपों में आदरणीय राम की सेवा को ही वे श्रेयस्कर बताती हैं:

''सिय रघुवीर की सेवा सुचि
ह्वै हैं तो जनिहौं सही सुत मोरे।''[12]

भगवती पार्वती अपने चल पतिव्रत, दृढ़ अनुरक्ति से शिव को पति रूप में प्राप्त करती हैं और प्रतिव्रताओं की शिरोमणि कही जाती हैं।

''उर धरि उमा प्रानपति चरना।
जाइ बिपिन लागी तपु करना।।''[13]

इन पात्रों के अतिरिक्त शबरी का पात्र भी तुलसी की दृष्टि में महान है।

3. स्त्री का परंपरागत सामाजिक रूप

तुलसीदास के युग में स्त्री अपनी विशिष्टता तथा मान से वंचित हो चुकी थी। उनके समय में स्त्री की प्रतिष्ठा पर बड़ा भारी कुठाराघात था। उसका जीवन परतंत्रता का दुखद इतिहास था। विवशता और आत्मा–दमन, बलिदान और दासता में उसका जीवन व्यतीत होता था। स्त्री चारों ओर से बंदिनी थी। वह इसलिए कि स्त्री को भोग्या समझा जाने लगा था अर्थात् स्त्री उपभोग की वस्तु है। शिक्षा, ज्ञान और सम्मान से वंचित स्त्री जड़ और मूर्ख समझी जाती थी। उसे खरीदा और बेचा जा सकता था। पुरुष उसे पैर की जूती की तरह समझता था। उस युग में स्त्री भी धन और यश के प्रलोभन में अपने पति का त्यागकर किसी अन्य पुरुष के साथ चले जाने में हिचकिचाहट अनुभव नहीं करती थी और तभी से पर्दाप्रथा का श्रीगणेश हुआ। गौरवमयी स्त्री अपनी गरिमा से अलग होकर वासना प्रेरित प्रणय शिक्षा मांगती फिरती थी। शूर्पनखा के रूप में तुलसी स्त्री के इसी अभिसारिका रूप की ओर संकेत करते है इसीलिए तुलसी उसको ढोल, गंवार, शूद्र और पशुओं में गणना करके उसे ताड़ना का अधिकारी मानते हैं:

''ढोल गंवार शूद्र पशु नारी।
''ये सकल ताड़न के अधिकारी।।''[14]

4. परंपरागत स्त्री निंदा

स्त्री की निंदा साधु–संतो, भक्तों, विरक्तों ने जहां की है, उसका एकमात्र कारण है कि परमात्म–प्राप्ति में वह बाधक बन जाती है साधारण जनता को भी वे सचेत करते हैं कबीर ने स्त्री निंदा कम नहीं की है:

''नारी की झांई परत, अंधा होत भुजंग।
कबीरा तिनकी कौन गति, नित नारी के संग।।''[15]

शास्त्रों ने स्त्री के तीन रूप माने हैं– कन्या, पत्नी तथा माता। तुलसीदास ने तीनों रूपों में स्त्री की महानता यत्र–तत्र प्रकट की है। स्त्री के विविध रूपों की ओर तुलसी ने संकेत किया है। एक ओर तो उन्होंने 'सपनेहुं आन पुरुष जग नाहीं' लिखकर स्त्री के उच्चादर्श ,त्याग और गौरव का अभिनंदन किया है तो दूसरी ओर 'पुरुष मनोहर निरखहिं स्त्री स्वरूप की घोर निंदा भी की है। स्त्री निंदा की प्रवृत्ति में तुलसी संतों के ही समान है। संतों के समान वे भी स्त्री को त्रिगुणों (तीन गुणों) को नष्ट करनेवाली, तप संयम की विरोध और साधना की शत्रु मानते हैं। वास्तव में वे स्त्री को अनिश्चित मनोवृत्तिवाली, सहज, अपावन और मूढ़ समझते हैं। उसके छलप्रवंचनाम हृदय के रहस्य को समझने में विधाता तक असमर्थन है।

''विधिहु न नारी हृदय गति जानी।
सकल कपट अध अवगुन खानी।''[16]

मंदोदरी द्वारा रावण को बार–बार राम को सीता लौटाकर हरिभजन करने की शिक्षा देने पर रावण समस्त स्त्री जाति के स्वभाव पर साहस, झूठ, चंचलता, माया, भय, अविवेक आदि आठ अवगुणों का आरोप कर देता हैः

''नारी सुभाउ सत्य कवि कहहीं।
अवगुन आठ सदा उर रहहीं।।''
साहस अनृत चपलता माया।
भय अविवेक असौच अदाया।।''[17]

इसी प्रवृत्ति के स्पष्टीकरण में समुद्र ने उसकी (स्त्री की) ढोल ,गंवार ,शूद्र और पशु में गणना करके उसे ताड़ना का अधिकारी माना है।

मिश्र बंधुओं ने तुलसीदास को स्त्री निंदक कहा है। उनके मतानुसारः

''तुलसी ने कौशल्या आदि के चरित्रों को इसीलिए सुंदर और पवित्र बताया है कि वे राम से संबंधित हैं। शेष नारियों को सहज, जड़, अपावन तथा स्वतंत्र होने के योग्य माना है।''[18]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि तुलसीदास पर स्त्रियों की निंदा का आक्षेप किया जाता है, किंतु यह कथन स्वीकार नहीं किया जा सकता। उन्होंने भक्ति की प्राप्ति के लिए स्त्री की निंदा की है, क्योंकि विषय वासना का प्रबल साधन है स्त्री पर सर्वत्र और सभी रूपों में उन्होंने स्त्री की निंदा नहीं की है। यह तथ्य तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' में स्त्री चरित्रों के पर्यवेक्षण से स्पष्ट है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी अपनी पुस्तक 'गोस्वामी तुलसीदास' में लिखा हैः

''सब रूपों में स्त्रियों की निंदा उन्होंने नहीं की है। केवल प्रेमदाया कामिनी रूप में, दाम्पत्य रति के आलंबन रूप में की है– माता, पुत्री, भगिनी आदि के रूप में नहीं।''[19]

सन्दर्भ सूची

1. शुक्ल, रामचंद्र (2012) *गोस्वामी तुलसीदास,* प्रकाशन संस्थान, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयागराज, पृ. 28।
2. वर्मा, रामकुमार (2010) *'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास',* लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ. 156।
3. गुप्त, माताप्रसाद (1942) *'तुलसीदास',* प्र0 सं0 1942, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयागराज, पृ. 56।
4. गोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025.
5. गोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025.

6. गोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025.
7. गोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025.
8. गोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025.
9. गोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025..
10. गोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025.
12. गोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025.
13. गगोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025.
14. गोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025.
15. गोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025.
16. गोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025.
17. गोस्वामी, तुलसीदास *'रामचरित मानस',* गीताप्रेस, गोरखपुर, https://www.ramcharit.in/, Accessed on 05/05/2025.
18. मिश्रबंधु, 'मिश्रबंधु विनोद' (2013) *गंगा,* पुस्तकमाला लखनऊ, पृ. 64।
19. शुक्ल, रामचंद्र (2012) *गोस्वामी तुलसीदास,* प्रकाशन संस्थान, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयागराज, पृ. 28।

——==00==——